

संक्षिप्त खबरें
लाइट हाउस प्रोजेक्ट
के 14 लाभुकों का
आवंटन रद्द

रांची : रांची नगर निगम ने मंगलवार को लाइट हाउस प्रोजेक्ट के 14 लाभुकों का आवंटन रद्द कर दिया है। नगर निगम का कठन है कि इन लाभुकों ने पहली विश्वत के बाद कोई राशि राजनीति की नहीं की है। आवंटन रद्द करने की सूचना नगर निगम के सहायक प्रशासक की ओर से जारी की गयी है। जिन लोगों का आवंटन रद्द हुआ है, उनमें ऐपु देवी सिंघालिया, जीतेदु कुमार, सर्विं पुष्पाल, साली कुमारी, मुकु जलली, रुक्मी देवी, सुपिंया देवी, जयो देवी, याम बरन दिंह, दीपक तिवारी, बीना देवी, शशिकला दास, सरोज दीपिता एवं अमरेण्ड्र कुमार जाने का नाम है। निगम ने इन आवंटियों को आपात रद्द कराने के लिए 22 जुलाई तक का समय दिया है।

सेल रांची में दो
कार्यपालक निदेशकों
ने पदभार ग्रहण किया

रांची : सेल रांची में दो नए कार्यपालक निदेशकों ने पदभार ग्रहण किया। प्रवान फुराह वर्मा ने कार्यपालक निदेशक (सी.डी.टी.) के पद पर ज्ञाइन किया तथा देवप्रकाश ने कार्यपालक निदेशक (मिलिटर ट्रायार्डेंस) के पद का पदभार लिया। आर.डी.सी.आई.एस के कार्यपालक निदेशक संघीप कर दिया गया। जो गुरुद्वय महाप्रधानक (परियोजना), बोकारो के पद पर थे। देवप्रकाश गुरुद्वय महाप्रधानक (सी.आई.एस) के द्वारा इन्हाँ संघर्ष के पद पर थे तथा श्री संघीप कर गुरुद्वय महाप्रधानक (कालिटी), बिलाई इन्हाँ संघर्ष के पद पर है। संघीप के कार्यपालक निदेशक जगदीश अरोड़ा ने वर्गा का तथा देवप्रकाश का एस.जे. जागर, गुरुद्वय महाप्रधानक (कार्मिक एवं प्रशासन) ने पृष्ठगुण से सहायता देवप्रकाश ने आर.डी.सी.आई.एस के कार्यपालक प्रभारी निर्विक बनाई गई औपचारिक मूलाकात की। सेल के सभी कर्मियों ने नए निदेशकों को बधाईयाँ दी।

ईडी न्यूकिलयस मॉल के मालिक विष्णु अग्रवाल से 26 को करेगी पूछताछ



प्रभात मंत्र संवाददाता
रांची : न्यूकिलयस मॉल के मालिक विष्णु अग्रवाल को ईडी ने मंगलवार को फिर से समन जारी किया है। समन जारी कर ईडी ने विष्णु अग्रवाल को 26 जुलाई को पूछताछ के लिए ईडी कार्यालय बुलाया है। इससे पूर्व ईडी ने सोमवार को भी पूछताछ के लिए बुलाया था लेकिन किसी कारणवश वह नहीं पहुंच सके थे। इसके बाद ही ईडी ने सोमवार को नया समन जारी किया है। ईडी ने विष्णु अग्रवाल को नया समन जारी किया है।

मंगलवार को नया समन जारी किया है। ईडी विष्णु अग्रवाल से रांची में हुए विभिन्न जमीन घोटाले मामले के अलावा पूर्व दीसी छवि रंजन से उके रिसे समेत कई अन्य सबलों के जबाब पाने की तैयारी में है। सेना की जमीन घोटाला मामले में अब तक ईडी एक आरएसएस छवि रंजन, राजस्व कर्मचारी और कई जमीन दलालों को सलाखों के पीछे भेज चुकी है।

लिए वैसे शहरों और उसमें पड़ने वाले मतदान केंद्रों को चिन्हित कराया गया है, जहां पिछले चुनावों में मतदान का प्रतिशत काफी कम रहा है। आकड़ों के मुताबिक झारखंड में 800 मास्टर ट्रेनर तैयार कर रहा है, जो जिता स्तर पर अधीनस्थ कर्मियों को प्रशिक्षित कर मतदान प्रतिशत बढ़ाने के तौर पर करेंगे।

लोकसभा चुनाव 2024 के दौरान झारखंड की सभी 14 सीटों पर शत प्रतिशत मतदान कराने का लक्ष्य मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी कार्यालय ने तय किया है। इसके बाद एप्रिल तक विशेष झारखंड के 800 ऐसे पदाधिकारियों को मास्टर ट्रेनर के रूप में तैयार करने में जुटे हैं।

आमतौर पर यह कहा जाता है कि पढ़-लिखे और शिक्षित जो पांश इलाकों में रहने वाले लोग मतदान करने नहीं पहुंचते। ऐसे में इन शहरों में मतदान का प्रतिशत 50 तक पहुंचना भी मुश्किल हो जाता है।

चुनाव आयोग ने इन शहरों के लिए मतदान केंद्रों को चिन्हित करते हुए मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए व्यापक तैयारी की है, जिसके तहत

18 वर्ष पूरा करने वाले युवा मतदाताओं के अधिक से अधिक मतदान करने के लिए व्यापक तैयारी की है। झारखंड के लिए जुलाई का अवधि तक का लिए व्यापक तैयारी की है। यह काम लिए जाएंगे।

लिखे और शिक्षित जो पांश इलाकों में रहने वाले लोग मतदान करने नहीं पहुंचते। ऐसे में इन शहरों में मतदान का प्रतिशत 50 तक पहुंचना भी मुश्किल हो जाता है।

चुनाव आयोग ने इन शहरों के लिए मतदान केंद्रों को चिन्हित करते हुए मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए व्यापक तैयारी की है, जिसके तहत

18 वर्ष पूरा करने वाले युवा मतदाताओं के अधिक से अधिक मतदान करने के लिए व्यापक तैयारी की है। झारखंड के लिए जुलाई का अवधि तक का लिए व्यापक तैयारी की है। यह काम लिए जाएंगे।

लिखे और शिक्षित जो पांश इलाकों में रहने वाले लोग मतदान करने नहीं पहुंचते। ऐसे में इन शहरों में मतदान का प्रतिशत 50 तक पहुंचना भी मुश्किल हो जाता है।

चुनाव आयोग ने इन शहरों के लिए मतदान केंद्रों को चिन्हित करते हुए मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए व्यापक तैयारी की है। झारखंड के लिए जुलाई का अवधि तक का लिए व्यापक तैयारी की है। यह काम लिए जाएंगे।

लिखे और शिक्षित जो पांश इलाकों में रहने वाले लोग मतदान करने नहीं पहुंचते। ऐसे में इन शहरों में मतदान का प्रतिशत 50 तक पहुंचना भी मुश्किल हो जाता है।

चुनाव आयोग ने इन शहरों के लिए मतदान केंद्रों को चिन्हित करते हुए मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए व्यापक तैयारी की है। झारखंड के लिए जुलाई का अवधि तक का लिए व्यापक तैयारी की है। यह काम लिए जाएंगे।

लिखे और शिक्षित जो पांश इलाकों में रहने वाले लोग मतदान करने नहीं पहुंचते। ऐसे में इन शहरों में मतदान का प्रतिशत 50 तक पहुंचना भी मुश्किल हो जाता है।

चुनाव आयोग ने इन शहरों के लिए मतदान केंद्रों को चिन्हित करते हुए मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए व्यापक तैयारी की है। झारखंड के लिए जुलाई का अवधि तक का लिए व्यापक तैयारी की है। यह काम लिए जाएंगे।

लिखे और शिक्षित जो पांश इलाकों में रहने वाले लोग मतदान करने नहीं पहुंचते। ऐसे में इन शहरों में मतदान का प्रतिशत 50 तक पहुंचना भी मुश्किल हो जाता है।

चुनाव आयोग ने इन शहरों के लिए मतदान केंद्रों को चिन्हित करते हुए मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए व्यापक तैयारी की है। झारखंड के लिए जुलाई का अवधि तक का लिए व्यापक तैयारी की है। यह काम लिए जाएंगे।

लिखे और शिक्षित जो पांश इलाकों में रहने वाले लोग मतदान करने नहीं पहुंचते। ऐसे में इन शहरों में मतदान का प्रतिशत 50 तक पहुंचना भी मुश्किल हो जाता है।

चुनाव आयोग ने इन शहरों के लिए मतदान केंद्रों को चिन्हित करते हुए मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए व्यापक तैयारी की है। झारखंड के लिए जुलाई का अवधि तक का लिए व्यापक तैयारी की है। यह काम लिए जाएंगे।

लिखे और शिक्षित जो पांश इलाकों में रहने वाले लोग मतदान करने नहीं पहुंचते। ऐसे में इन शहरों में मतदान का प्रतिशत 50 तक पहुंचना भी मुश्किल हो जाता है।

चुनाव आयोग ने इन शहरों के लिए मतदान केंद्रों को चिन्हित करते हुए मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए व्यापक तैयारी की है। झारखंड के लिए जुलाई का अवधि तक का लिए व्यापक तैयारी की है। यह काम लिए जाएंगे।

लिखे और शिक्षित जो पांश इलाकों में रहने वाले लोग मतदान करने नहीं पहुंचते। ऐसे में इन शहरों में मतदान का प्रतिशत 50 तक पहुंचना भी मुश्किल हो जाता है।

चुनाव आयोग ने इन शहरों के लिए मतदान केंद्रों को चिन्हित करते हुए मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए व्यापक तैयारी की है। झारखंड के लिए जुलाई का अवधि तक का लिए व्यापक तैयारी की है। यह काम लिए जाएंगे।

लिखे और शिक्षित जो पांश इलाकों में रहने वाले लोग मतदान करने नहीं पहुंचते। ऐसे में इन शहरों में मतदान का प्रतिशत 50 तक पहुंचना भी मुश्किल हो जाता है।

चुनाव आयोग ने इन शहरों के लिए मतदान केंद्रों को चिन्हित करते हुए मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए व्यापक तैयारी की है। झारखंड के लिए जुलाई का अवधि तक का लिए व्यापक तैयारी की है। यह काम लिए जाएंगे।

लिखे और शिक्षित जो पांश इलाकों में रहने वाले लोग मतदान करने नहीं पहुंचते। ऐसे में इन शहरों में मतदान का प्रतिशत 50 तक पहुंचना भी मुश्किल हो जाता है।

चुनाव आयोग ने इन शहरों के लिए मतदान केंद्रों को चिन्हित करते हुए मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए व्यापक तैयारी की है। झारखंड के लिए जुलाई का अवधि तक का लिए व्यापक तैयारी की है। यह काम लिए जाएंगे।

लिखे और शिक्षित जो पांश इलाकों में रहने वाले लोग मतदान करने नहीं पहुंचते। ऐसे में इन शहरों में मतदान का प्रतिशत 50 तक पहुंचना भी मुश्किल हो जाता है।

चुनाव आयोग ने इन शहरों के लिए मतदान केंद्रों को चिन्हित करते हुए मतद



भुकुंड में वार्षिक उत्सव व पत्थलगड़ी का स्थापना
दिवस 20 जुलाई को

खरसांत (प्रभात मंत्र संवाददाता) : कुचाला प्रखंड क्षेत्र के मरणगृह तुंचनात अंतर्गत ग्राम सभा मंच भुकुंड के द्वारा आगामी 20 जुलाई दिन गुरुवार को सम्पुष्टिक विकास तथा सासाधनों की आविकार के लिए स्थानीय पथलगड़ी का वार्षिक उत्सव व स्थानीय दिवस परमारिक रीति विवाज के साथ मनाया जाएगा है। कार्यक्रम की शुरुआत सुबह 8:00 बजे पथलगड़ी परिसर में विधिवत देऊरी के द्वारा पूजा अर्चना, 12:00 बजे गारंगा सास्कृतिक कार्यक्रम एवं आदिवासी परमारिक नाच गान के साथ जनप्रतिनिधियों एवं अधियों का स्वातंत्र्य व सम्मानित कार्यक्रम के साथ विश्व आदिवासी नृत्य व नाच गान की भी अयोजित की गया है। उक्त जनकारी ग्राम सभा साचिव भरत सिंह मुंदा ने दिया है।

कांडा बाजार परिसर में लगाए आम के पौधे

गाहरिया (प्रभात मंत्र संवाददाता) : सामाजिक कार्यकर्ता जयहरि प्रमाणिक के नेतृत्व में कांडा बाजार परिसर में वृक्षारोपण अभियान चलाया गया। इस दौरान बाजार परिसर में दर्जनों आम के पौधे लगाए गए। उहाँने लोगों से अधिक से अधिक फलदार पौधे लगाने की अपील किया। इस दौरान वृक्षारोपण कर उनकी सुरक्षा के लिए जातियों भी लगाई गई। इस अभियान में बाल घटावारी, पवन गुजा, जरफ अलू, संजय गोराई, संतोष रुक्म, विपिन प्रसाद, छोटे प्रसाद आदि भी शामिल थे।

लीविंग पाउडर व फॉरिंग मशीन से छिड़काव

करने की मांग

जमशेदपुर (प्रभात मंत्र संवाददाता) : मां तुझे सलाम संस्था ने जमशेदपुर खासमहल स्थित स्किल सर्जन कार्यालय में मच्छर के प्रकार को देखत हुए एक जापन दिया गया, जिसमें कहा गया कि इन दिनों जमशेदपुर में मच्छरों का प्रकार इतना बढ़ गया है कि इससे लोगों को बीमारियां हो रही हैं। अतः संस्था को 10 बोरो ब्लींचिंग पाड़डर एवं खासमहल, कीतारीडी, परसुडीह, कर्साडी, आर. ई.ओ. ऑफिस, बी.डी.ओ. ऑफिस इन क्षेत्रों में फॉरिंग मशीन से छिड़काव करवाया जाए। जापन देने वाले ने मोहाम्मद अजहर खान, सुर्जोन सिंह सरदार, प्रदीप कुमार, शकूरना, कानू हेंड्रेम, मुकेश पाल आदि लोग उपस्थित थे।

आमुमो का एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर आज

पटमदा (प्रभात मंत्र संवाददाता) : आरांड उम्कि मोर्चा के कार्यकर्ताओं का एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर पटमदा के डाकबांला भवन परिसर में बुधवार को सुबह 11 बजे से आयोजित की गई है जिसकी तैयारियां प्रखंड कमीटी के प्रशिक्षियों ने मंगलवार शाम तक पूरी कर ली हैं। जानकारी देते हुए विधायक प्रतिनिधि चंद्रशेखर दुर्दु ने बताया कि प्रशिक्षण शिविर में मुख्य अतिविधि के रूप में विधायक मंसल कलिल मौजूद हैं। दुर्दु ने बताया कि शिविर में पटमदा प्रखंड के 15 पंचायतों से 20-20 कार्यकर्ता शामिल होंगे। उहाँने बताया कि बारिश के मौसम होने के कारण मैदान में भव्य अंडाल का निर्माण किया गया है। इस दौरान मुख्य रूप से प्रखंड अध्यक्ष अधिकारी महतों, सुभाष कर्मकार, सिजेन हेव्यम, सुजीत महतों समेत अन्य कई लोग मौजूद थे।

आगुइडांगरा में विधायक की पहल पर 24 घंटे में लगा नया ट्रांसफार्मर

पटमदा (प्रभात मंत्र संवाददाता) : पटमदा प्रखंड के आगुइडांगरा गांव में जुआसलाई विधायक मंडल कलिली के पहल पर 24 घंटे पर दिन पूर्व खरब हुए 63 के क्षेत्रों का ट्रांसफार्मर को बदलकर 24 घंटे के अंदर 100 के लिए एक नया ट्रांसफार्मर उपलब्ध कराया गया।

जिसका उद्घाटन मंगलवार को विधायक के आम सचिव रायमुख दुर्दु ने बताया कि विधायक के प्रयास से ही दो दिन पूर्व 63 के क्षेत्रों का नया ट्रांसफार्मर आगुइडांगरा में लगाया गया था लेकिन वो दिन चलने के बाद पुनः खरब हो गई। इस बात की जानकारी ग्रामीणों ने जब विधायक को दी तो उहाँने विधायी अधिकारियों से संपर्क कर 24 घंटे में नया ट्रांसफार्मर उपलब्ध कराया दिया। उद्घाटन के दौरान विधायक प्रतिनिधि चंद्रशेखर दुर्दु सुभाष कर्मकार, अधिकारी महतों, दीपक रंजित, कृष्णा लोहार, संदीप महतों, साधु दास व चरण सिंह समेत अन्य कई लोग मौजूद थे।

मुख्यमंत्री पश्चिम विधायक समिति के तहत लाभकांतों के बीच वकरा वितरण

ईचांगढ़ (प्रभात मंत्र संवाददाता) : सारयकेला खरसावां जिला के

ईचांगढ़ प्रखंड मुख्यालय परिसर में मंगलवार को मुख्यमंत्री पश्चिम विधायक समिति के तहत लाभकांतों के बीच बकरा विकास योजना अन्तर्गत कलरा एवं बकरी के बीच विधायक की वितरण किया गया। प्रखंड क्षेत्रों के 6 लाभकांतों को 6 बकरा एवं 24 बकरी दिया गया। उहाँने कहा कि और चार्चनी लाभकांतों की बीच बकरा बकरी वितरण किया जाएगा।

अंतरार्थीय वीरांगना फाउंडेशन का हुआ गठन, रेणु सिंह अध्यक्ष और इन्दु सिंह बनी महामंत्री

जमशेदपुर (प्रभात मंत्र संवाददाता) : अंतरार्थीय वीरांगना फाउंडेशन की अंतरार्थीय महामंत्री सिंह के नेतृत्व में मानगों इकाई का पूर्ण गठन किया गया। जिसमें सर्वसम्मति से रेणु सिंह महामंत्री, इन्दु सिंह महामंत्री और अंशु, विनोद सिंह ने भाग लिया।

किरण सिंह उपाध्यक्ष और संगठन सचिव धृति सिंह को बनाया गया। इन सभी पदाधिकारियों ने भारती सिंह ने मानग पहानकर बधाई दी गई। मौके पर वीरांगना सदस्य सीमा सिंह, रजनी सिंह, गुडिया सिंह, चित्रलेखा सिंह, खुशबू सिंह, विनोद सिंह आदि वीरांगना उपस्थित थी।

मतदाता सूची पुनरीक्षण कार्यक्रम 2024 के तहत एक दिवसीय प्रशिक्षण सहाय्या

सारयकेला (प्रभात मंत्र संवाददाता) : विशेष संस्कृत मतदाता सूची पुनरीक्षण कार्यक्रम 2024 के आलोक में 57 खरसावां विधायक सम्बन्धी अन्तर्गत सारयकेला अचल क्षेत्र के बीलांगों एवं बीएलों परवेलोंको प्रवाड़ सह अंचल कार्यालय सरयावां में अधिकारी संघरण कार्यक्रम सुचूप कुमार सिन्हा ने अतिथियों में विधायक सम्बन्धी अधिकारी की विधायक सम्बन्धी कार्यक्रम के साथ विश्व आदिवासी नृत्य व सम्मानित कार्यक्रम के साथ विश्व आदिवासी गान की भी अयोजित की गया है। उक्त जनकारी ग्राम सभा साचिव भरत सिंह मुंदा ने दिया है।

राष्ट्रपति ने सरायकेला-खरसावां उपायुक्त को भूमि सम्मान 2023 से किया सम्मानित

प्रभात मंत्र संवाददाता

सरयकेला : केंद्र सरकार के भूमि संसाधन विभाग, ग्रामीण विकास मंत्रालय को नई दिल्ली के विज्ञान भवन सभागां में आयोजित सम्मान समारोह के राष्ट्रपति द्वारा मूर्ख ने सरायकेला-खरसावां के उपायुक्त अरवा राजकमल भूमि सम्मान-2023 स्टेटिमन मर्टिफिकेट प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस दौरान बाजार परिसर में दर्जनों आम के पौधे लगाए गए। उहाँने लोगों से अधिक से अधिक फलदार पौधे लगाने की अपील किया। इस दौरान वृक्षारोपण कर उनकी सुरक्षा के लिए जातियों भी लगाई गई। इस अभियान में बाल घटावारी, पवन गुजा, जरफ अलू, संजय गोराई, संतोष रुक्म, विपिन प्रसाद, छोटे प्रसाद आदि भी शामिल थे।



पुरस्कार प्राप्त करने वाली जिले की टीम में अपर उपायुक्त सुबोध कुमार मिन्हा एवं जिला भूमि संसाधन विभाग के उपायुक्त की ओर सम्मानित राज्यों को विश्वपति द्वारा मूर्ख ने प्रस्तुत किया गया।

डिजिटलीकरण द्वारा भूमि अधिकारी विभागीय कार्यालय के लिए एक व्यापक एकीकृत भूमि प्रबंधन प्रणाली अवलंगत है। राष्ट्रपति ने कहा कि डिजिटलीकरण से पारदर्शिता बढ़ती है। भू-अधिकारी विभागों के विकास के लिए एक व्यापक एकीकृत भूमि प्रबंधन प्रणाली की जरूरत है। इस अवसर पर राष्ट्रपति ने कहा कि देश के सम्पर्क विकास के लिए एक व्यापक एकीकृत भूमि संसाधन विभाग, ग्रामीण विकास के लिए एक व्यापक एकीकृत भूमि प्रबंधन प्रणाली की जरूरत है। इसके लिए एक व्यापक एकीकृत भूमि प्रबंधन प्रणाली की जरूरत है।

अधिकारी विभाग की आधुनिकीकरण एक जीवनी आवश्यकता है। विकास के लिए एक व्यापक एकीकृत भूमि प्रबंधन प्रणाली अवलंगत है। राष्ट्रपति ने कहा कि डिजिटलीकरण से पारदर्शिता बढ़ती है। भू-अधिकारी विभागों के विकास के लिए एक व्यापक एकीकृत भूमि प्रबंधन प्रणाली की जरूरत है। इस अवसर पर राष्ट्रपति ने कहा कि देश के सम्पर्क विकास के लिए एक व्यापक एकीकृत भूमि प्रबंधन प्रणाली की जरूरत है। इसके लिए एक व्यापक एकीकृत भूमि प्रबंधन प्रणाली की जरूरत है।

टीपीएसडीआई ने विश्व युवा कौशल दिवस पर 2 लाख छात्रों को प्रशिक्षित किया

प्रभात मंत्र संवाददाता

जमशेदपुर : विश्व युवा कौशल दिवस के अवसर पर, टाटा पावर स्किल डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट (टीपीएसडीआई) ने अधिकारी विभागीय आदावी की आयोजित सम्मान समारोह के लिए एक व्यापक एकीकृत भूमि प्रबंधन प्रणाली अवलंगत है। राष्ट्रपति ने कहा कि डिजिटलीकरण से पारदर्शिता बढ़ती है। भू-अधिकारी विभागों के विकास के लिए एक व्यापक एकीकृत भूमि प्रबंधन प्रणाली की जरूरत है। इस

संपादकीय

चांद को ओर सफर

‘चंद्रयान-3’ पृथ्वी की पहली कक्षा पार कर चुका है। अभी वह पृथ्वी के ही चक्रकर काटेगा और वहाँ से चांद तक का सफर तय करेगा। जिस दिन ‘चंद्रयान-3’ का सफल प्रक्षेपण किया गया था, तब करोड़ों भारतीयोंने तालियाँ बजाई थीं। ‘भारत माता की जय’ और ‘वंदे मातरम्’ सरोखे उद्घोष गूंज उठे थे। भारत के लिए चंद्रयान, गणनायन आदि मिशन ही महत्वपूर्ण नहीं हैं, बल्कि सामान्य उपग्रह भी अर्थपूर्ण हैं। अंतरिक्ष में भारत और इसरो का महत्व बढ़ता जा रहा है। अब अमरीका का नासा भी इसरो के साथ साझा मिशन का आगाज करेगा, यह दोनों देशों के बीच समझौता हो चुका है। ‘चंद्रयान-3’ भारत और विश्व के अंतरिक्ष-इतिहास का एक मील पत्थर साबित हो सकता है। चीन जैसे दुश्मन देश के सरकारी अखबार ‘ग्लोबल टाइम्स’ तक ने भारत और इसरो को बधाई दी है, बेशक वहाँ की सत्ता के भीतरी भाव भय और जलन के होंगे। बहरहाल अब आगामी 23 अगस्त तक समूचे भारत और विश्व की निगाहें और शुभकामनाएं ‘चंद्रयान-3’ पर स्थित होंगी कि वह चांद की सतह पर सॉफ्ट लैंडिंग के लिए तैयार है।

भारत के लिए चंद्रयान, गणनायान आदि मिशन ही महत्वपूर्ण नहीं हैं, बल्कि सामान्य उपग्रह भी अर्थपूर्ण हैं। अंतरिक्ष में भारत और इसरो का महत्व बढ़ता जा रहा है। अब अमेरिका का नासा भी इसरो के साथ साझा मिशन का आगाज करेगा, यह दोनों देशों के बीच समझौता हो चुका है। 'चंद्रयान-3' भारत और विश्वके जल के साक्ष्य मिल थे। चंद्रयान-3 का सफर उससे बहुत आगे का है। यदि लैंडर 'विक्रम' और रोवर 'प्रज्ञान' अपने मिशन में सफल रहे, तो 'चंद्रयान-3' चांद की समूची सतह, पानी के व्यापक क्षणों, चांद की मिट्टी और और रासायनिक तत्त्वों, रोशनी और रेडिएशन आदि का सम्पूर्ण अध्ययन कर सकेगा। उससे संभव होगा कि चांद पर इनसानी जिंदगी बसाई जा सकती है।

अंतरक्ष-झटहास का एक मोल पथर सावित हो सकता है। चीन जैसे दूशमन देश के सरकारी अखबार 'ग्लोबल टाइम्स' तक ने भारत और इसरो को बधाई दी है, बेशक वहां की सत्ता के भीतरी भाव भय और जलन के होंगे। बहरहाल अब आगामी 23 अगस्त तक समृद्ध भारत और विश्व की निगाहें और शुभकामनाएं 'चंद्रयान-3' पर स्थित होंगी कि वह चांद की सतह पर सॉफ्ट लैंडिंग कैसे करता है। 'चंद्रयान-1' ने जो डाटा उपलब्ध कराया था, उससे चंद्रमा पर जल के साक्ष्य मिले थे। 'चंद्रयान-3' का सफर उससे बहुत आगे का है। यदि लैंडर 'विक्रम' और रोवर 'प्रज्ञान' अपने मिशन में सफल रहे, तो 'चंद्रयान-3' चांद की समृद्धी सतह, पानी के व्यापक कर्णों, चांद की मिट्टी और रासायनिक तत्त्वों, रोशनी और रेडिएशन आदि का सम्यक अध्ययन कर सकेगा। उससे संभव होगा कि चांद पर इनसानी जिंदगी बसाई जा सकती है अथवा नहीं।

कामयाब रहा, तो भारत चांद पर अपने सफर का अगला कदम बढ़ाएगा। चांद पर अपने सफर को उतार कर उसे पृथ्वी पर वापस लाने का प्रयास किया जाएगा। दरअसल अभी यह मिशन एकतरफा है। यह चांद तक पहुंचने का मिशन है। वापसी संभव नहीं है। चांद पर पहुंच कर पृथ्वी पर लौटना इससे ज्यादा महत्वपूर्ण है। वैसे ही 'चंद्रयान-3' के सफल प्रक्षेपण के साथ ही इसरो ने एक और इतिहास रच दिया है। मिशन को भारत के शक्तिशाली रोकेट एलवीएम-3 से लॉन्च किया गया है। इसकी पेलोड क्षमता 4000 किलोग्राम तक है। भारत का पहला उपग्रह प्रक्षेपण यान-'एसएलवी 3'-मात्र 40 किलोग्राम पेलोड ही पृथ्वी की निचली कक्षा में ले जाने में सक्षम था। गौरतलब यह है कि अंतरिक्ष में 'गगनयान' के जरिए इनसानों को भेजने और चांद पर अगला मिशन भेजने का रास्ता साफ होगा। 'गगनयान' में तीन अंतरिक्ष यात्रियों को भेजना प्रस्तावित है। कितनी सफलता मिलती है, यहाँ अभी भविष्य के गर्भ में है। अभी तक चांद पर सबसे अधिक मिशन अमरीका और रूस ने भेजे हैं। अमरीका ने छह बार इनसान को चांद पर भेजा और वे सकुशल धरती पर लौट भी आए। लेकिन रूस ने अभी तक इनसान को चांद पर नहीं भेजा है। अलवता उसने कई बार चांद पर सॉफ्ट लैंडिंग जरूर की है। चीन ने भी 2013 में 'चेंग-3' के जरिए चांद पर सॉफ्ट लैंडिंग की थी। इस तरह 'चंद्रयान-3' मिशन सफल रहा, तो इस दिशा में भारत विश्व का चौथा देश होगा।

ੴ ਸਤਿਗੁਰ

तिलिस्म है सरकारी खजाने का और कोई लुटेरा न
से जाटगांव बच गया। हिमाचल में सरकारी धन

अपव्यय में फक्क करना जब तक जरूरी नहीं होता, जेनता अपनी ही रग्गा का काटकर ताली बजाती रह जाएगी। प्रदेश को जगमगाते देखना हो तो राजधानी के उस कक्ष में जाइए जो सरकार कहलाती है, फिर मालूम होगा कि हर फाइल जादूगर है और हाथ की सफाई से जनता के पैसे को इधर से उधर करती है। जैसे बरसात में डंगे गिरते हैं या यूं कहें कि हम साल भर यह देखते हैं कि अपनी गिरावट किसके माथे पर डालें, उसी तरह हिमाचल की किस्मत की लकीरे पढ़ते-पढ़ते सियासत ने सिफं यह सीख लिया कि सत्ता में शाबाशियां और विपक्ष में आरोपों के चीजें बिना वारद होते रहते हैं। पर्यावरण की विविधता और जलवायिकाओं को उपरोक्त प्रभावों

बायक कस तरह बच डाले प्रदेश का नालिया जारी नालियाका का। हमारा सभना केंद्रीय योजना-परियोजना के दो मुजरिम हैं। जिन्हें स्मार्ट सिटी शिमला का करें या धर्मशाला का करें, एक अवसर को उजाड़ने का शिद्वत से इस्तेमाल हुआ। शिमला डंगों और पिंजरों का शहर हो गया, तो धर्मशाला में स्मार्ट सिटी परियोजना की असमत लूट ली गई। इस बीच पिछली सरकार के जादूगर यानी शहरी विकास मंत्री अपना करतब दिखाते हुए, बजट को उड़ाते रहे। आज शिमला की आंखों में जिस परियोजना ने सुरमा डालना था, वह वरसात के आंखों में बह रहा है। धर्मशाला की स्थिति आरंभ से ही खराब है। पहले एक मुकाबला यह हुआ कि यह हिमाचल की पहली स्मार्ट सिटी कैसे धोधित हो गया और फिर भाजपा ने इसे मोदी सरकार की मेरबानियों में देखा तो कांग्रेस ने केंद्र से पूरा बजट न मिलने की शिकायत की। हालांकि शिमला में 2905 करोड़ के प्रस्ताव थे, लेकिन यह घटकर 706 करोड़ तक ही सिमट गया, जबकि धर्मशाला में कुल 2109 करोड़ से से परियोजना बनी थी, जो घटकर मात्र 631 करोड़ की रह गई। इस तरह कराड़ों की परियोजनाओं को पहले ही फांसी लगा दी गई, जबकि जिस तरह इस काम को आगे बढ़ाया, उससे केवल धन का दुरुपयोग ही सामने आने लगा है। स्मार्ट रोड की परिकल्पना शहर की बदकिस्मती बन गया, तो अब मामला फुटवाल स्टेडियम की विजिलेंस जांच तक पहुंच गया। स्मार्ट सिटी के ओहदेदार या पिछली सरकार की व्यवस्था ने मिलकर ऐसा कारनामा किया कि फुटवाल स्टेडियम परियोजना सिर्फ धन के व्यय में मस्त होकर यह भी नहीं जान सकी कि खेलने के अंतरराष्ट्रीय मानदंड भी पूरे होने चाहिए। अब खड़ु के किनारे स्मार्ट सिटी का पैसा फूंक कर तमाशा हो गया। इसी तरह का तमाशा दिखाते हुए स्मार्ट सिटी का पैसा कहीं किसी निगम को दे दिया, तो कहीं विभाग को सौंप दिया गया एवं एचआरटीसी की वर्कशॉप पर तेरह करोड़ लग गए, लेकिन डिपो इलेक्ट्रिक नहीं आगे बढ़ गई कि यह स्थानीय परिवहन के बजाय एचआरटीसी के फेल रूटों को ढोने लग पड़े। हैरानी यह कि आधुनिक बस स्टॉप के नाम पर करोड़ों के काम हो गए, लेकिन इनमें से कइयों पर आकर बसें उहरती नहीं थीं कई पार्किंग स्थल बन गए। सरकारी कामकाज का यह ढर्हा हिमाचल को असफल बनाने का जरिया बन गया है। यहां वरसात कई विभागों के पाप धो जाती है। यहां योजनाओं के ऊपर नई परियोजनाएं विराजित हो सकती हैं। हम वरसात हमीरपुर में न जाने कितने बाइपास बना कर भी यातायात को सुचारू नहीं बना पाएंगे। हम प्रदेश भर में हजारों डाक बंगले बना कर भी संतुष्ट नहीं होंगे। हमारा

सरकार उन वित्तीय संस्थाओं से लाभांश प्राप्त करती है जिसमें सरकार की हिस्सेदारी होती है

रिजर्व बैंक का लाभांश हस्तांतरण लाभप्रद

डा. जयंतीलाल भंडारी

चूंकि देश ने वर्ष 2047 तक विकसित देश बनने का लक्ष्य रखा है, इस लक्ष्य को पाने के लिए आगामी 24 वर्षों तक लगातार करीब 7 से 8 फीसदी की दर से बढ़ाने के लिए राजकोषीय स्तर को संतोषप्रद बनाए रखना होगा। ऐसे में हम उम्मीद करें कि रिजर्व बैंक के द्वारा वित वर्ष 2022-23 के लिए दिया गया लाभांश जहां एक ओर वैशिक मंदी की चिंताओं के बीच देश के लिए राजकोषीय चुनौतियों के समाधान में अहम भूमिका निभाएगा, वहीं दूसरी ओर भारत विकसित देश बनाने की डगर पर आगे बढ़ाने में मील का पथर साबित होगा।

इस समय जब देश का विदेश व्यापार घटा बढ़ते हुए दिखाई दे रहा है, तब

भारतीय रिजर्व बैंक के निदेशक मंडल के द्वारा 6 फीसदी आक्रमिक निधि (सोएफ) सुरक्षित सुनिश्चित रखते हुए वर्ष 2022-23 के लिए केंद्र सरकार को 87416 करोड़ रुपए का लाभांश हस्तांतरण लाभप्रद दिखाई दे रहा है। इससे इस वित्त वर्ष 2023-24 में राजकोषीय चुनौतियों का मुकाबला करते हुए राजकोष को मजबूती दी जा सकेगी और विकास को बढ़ाया जा सकेगा गैर-तरलब है कि यह लाभांश चालू वित्त वर्ष में केंद्र के गैर कर राजस्व में सामिल होगा। ज्ञातव्य है कि चालू वित्त वर्ष के बजत में रिजर्व बैंक, सरकारी बैंकों विविभन्न वित्तीय संस्थानों से 48000 करोड़ रुपये लाभांश मिलने का अनुमान लगाया गया था, जबकि इस वर्ष अब सिर्फ रिजर्व बैंक के द्वारा सरकार को दिया जा रहा लाभांश सरकार के लक्ष्य से 82 प्रतिशत ज्यादा है। सरकार उन वित्तीय संस्थाओं से लाभांश प्राप्त करती है जिसमें सरकार की हिस्सेदारी होती है। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2022-23 के लिए हस्तांतरित की जाने वाली लाभांश राशि वित्त वर्ष 2021-22 की तुलना में करीब तिगुनी है। आरबीआई ने केंद्र सरकार के सबसे ज्यादा लाभांश वित्त वर्ष 2018-19 में दिया था, जिसका आकार 175988 करोड़ रुपये था रिजर्व बैंक ने वित्त वर्ष 2019-20 में 57128 करोड़ रुपये तथा वित्त वर्ष 2020-21 में 99122 करोड़ रुपये लाभांश के रूप में केंद्र सरकार को दिये थे। खास बात यह है कि इस वित्तीय वर्ष में रिजर्व बैंक के लाभांश की बजह से केंद्र का राजकोषीय घटाया 16.99 लाख करोड़ रुपये या सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का 5.6 प्रतिशत रह जाएगा सरकार ने राजकोषीय घटाया 17.87 लाख करोड़ रुपये यानी जीडीपी का 5.9 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया था। राजकोषीय हिस्सा से लाभांश से मिला अतिरिक्त राजस्व जीडीपी का करीब 0.2 प्रतिशत है। इस वर्ष रिजर्व बैंक द्वारा केंद्र सरकार को ज्यादा लाभांश हस्तांतरित करने की प्रमुख बजह विदेशी मुद्रा की बिक्री से हुई आमदनी है। पिछले वित्त वर्ष 2022-23 में रुस-



कीमत ये का करीब रिजर्व डॉलर का मयुक्त यह है लोंग के प्रति के आए। व्यापारों त होने वाले दशों के व्यापार मौसम पर भी अपरकार करोड़ न अब हैं और ता है। र फिर ती है। नाव हैं ऐसे पर्यावरण को ब्याज के मद में अधिक भुगतान करना हागा। यह उल्लेखनीय है कि हाल ही में फेंडरेशन र ईडियन एक्सपोर्ट आर्गेनाइजेशंस (फियो) कार्यक्रम में यह बात एक मत रखाकिंत हुई है। रूस-यूक्रेन युद्ध में तेजी से आने वाला समय र से निर्यात और व्यापार संतुलन के लिए व चुनौतीपूर्ण व कठिन है। चालू वित्तीय वर्ष 2024 की शुरुआत से ही अप्रैल और मई महीने विनियंत घने व व्यापार घाटा बढ़ने का परिणाम दिखाई देने लगा है। पिछले वर्ष 2022-23 भारत का कुल व्यापार घाटा इससे पिछले वर्ष 83 अब डॉलर से बढ़कर 122 अब डॉलर गया है। अब इस वर्ष व्यापार घाटे के और बढ़ा आशंका है। स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि चालू वर्ष 2023-24 उत्पाद निर्यात के लिहाज से बढ़नहीं रहने वाला है। भारत अपने कुल उत्पाद निर्यात का सबसे अधिक करीब 17.50 फीसदी निर्यात अमेरिका को करता है, जो मंदी की चेपट में दिख रहा है। अमेरिका में महंगाई अपने चरम और इसे रोकने के लिए अमेरिकी फेंडरल लगातार व्याज दरों में ज़िजाकर रही है। इस की आर्थिक दशा भी ठीक नहीं चल रही है। रूस-यूक्रेन युद्ध के बीच योरोप के अधिकतर देश गैंग खाद्य संकट से ज़ोहर होते हैं जिससे वहां महंगाई के साथ औद्योगिक उत्पादन भी कम हो गया। संभवतया यही कारण है कि वाणिज्य विभाग तरफ से चालू वित्ती वर्ष 2023-24 के लिए निर्यात लक्ष्य अब तक तय नहीं किया गया।

गंगांगड़ा जिले के सबसे बड़े सरकारी स्वास्थ्य संस्थान राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं, आम जन की भा

१०

व्यवस्था को खामियों का दरा झेल रहा है। वर्ष 2017 का शिलान्यास पूर्व मुख्यमंत्री स्व. वीरभद्र सिंह शांता कुमार की उपरिस्थिति में किया था। तब कुमार की सोच और प्रयत्नों का ही परिणाम था। आए बीमारों के तिमारदारों के लिए रहने की अमलीजामा पहनाने का कार्य आरंभ हुआ था। अपनी सांसद निधि से पचीस लाख रुपये दिए जाएंगे। कार्य के लिए पूर्व राजसभा सांसद विल्ल ठाकुर सांसद निधि से पचीस लाख रुपयों का योगदान परन्तु केवल पचास लाख रुपये से सराय भल्ला संभव न था, इसलिए वर्ष 2017 में शांता कुमार स्थायी समिति का अध्यक्ष होने के नाते भारत हेल्पर्स लिमिटेड से 2 करोड़ रुपए की अतिरिक्त राशि संभवी थी। पूर्व सांसद शांता कुमार के अनुसार एक अन्य सरकार के द्वालमुल रवैये के कारण 2 करोड़ अपनी प्रतिबद्धता वापस ले ली थी। आज डाइन निर्मित यह आधा अधूरा भवन अपनी बेहाली रहा है। चारों तरफ झाड़ियां उग आई हैं और पौधों जंग खा रहे हैं। करदाताओं की मेहनत की काम कुमार जैसे प्रबुद्ध राजनेता के प्रयास आज नकारा और तीन-तीन सरकारोंके उदासीन रैण्ड की भौमि दे रहे हैं। अनुमानित प्रतिदिन 500 से अधिक लोगों के विभिन्न विभागों में आते हैं। कांगड़ा, चंबा, ऊना जिलों के सरकारी अस्पतालों से आपातकालीन चिकित्सा सेवाएं टांडा मेंडिक रेफर की जाती हैं। मरीजों के साथ आए तिमारदारों कोई व्यवस्था नहोने के चलते या तो उन्हें अस्पताल में राते बितानी पड़ती है या अस्पताल के महंगे होटलों या गेस्ट हाउस में ठहरना पड़ता है। टांडा अस्पताल जैसे सरकारी अस्पतालों अधिकांश मरीज निर्धन होते हैं जो रहने-खाने के लिए अतिरिक्त खर्च करने में अक्षम होते हैं। इसी दृष्टि से हमारे देश की विकृत व्यवस्था का आलम यह अस्पताल में आने वाले गरीबों के तिमारदारों के व्यवस्था की न किसी की जिम्मेदारी है न ही नौकरशाहों के पास यह सब सोचने का समय परिवर्तन के खोखले नारे और बड़े बड़े ।

ने सराय को चलाने और कार्य पूर्ण होने के लिए इसकी तरफ से पूरी असमर्थता जाहिर की है। बेशक रेडक्रॉस सोसायटी कांगड़ा को यह जिम्मा सौंपने गई थी, परन्तु सब सरकारें पूरे पांच वर्ष का अपना पूरा करने के बावजूद इस कार्य को अंजाम तक नहीं सरकारें बदलती रहीं, अफसर बदलते रहे, परन्तु यह कार्य खटाई में पड़ता रहा। पूर्व मुख्यमंत्री और कुमार सरकारों की कार्यप्रणाली से निराश ही खिन्न भी है। उनकी अपनी ही सरकार यानी जयपुर के समय उनके शिष्य विधिन सिंह परमार स्वास्थ्य शांता कुमार ने उनसे भी सराय का कार्य पूर्ण कर आग्रह किया था, परन्तु नतीजा वही ढाक के तीन पराया। हालांकि वर्तमान मुख्यमंत्री सुखविंदर मुख्यमंत्री बनते ही शांता कुमार से आशीर्वाद दिया गया था, लेकिन वही शांता कुमार पर चल कर उनके अधूरे कामों को पूरा करने में फ़ैला परन्तु दुर्भाग्यशाली नई सरकार को आए भी लगभग दो महीने ही चुके हैं और सराय की तरफ किसी का नहीं गया है। बदलाल सरकारी व्यवस्था और उदासीन रवैं के कारण करदाताओं की मेहनत व दूबने के कागर पर ही है, साथ में ही रीबों, मालियों और बीमारों के लिए सरकारी सुविधाओं के सब दावे साबित हो रहे हैं। पार्टियों द्वारा सरकारें बनाने के जनकल्याणकारी योजनाओं की घोषणा की जानी की तरह पैसा बहाया जाता है, परन्तु सत्ता जनकल्याण के तमाम दावे भुला दिये जाते हैं। वे असंख्य जन-कल्याणकारी योजनाओं के बारे में असहाय ही रह जाता है। प्रशासनिक अधिकारी फ़ैला पर तमाम जनकल्याणकारी योजनाओं को धारत कर अमलीजामा पहनाने की जिम्मेदारी है, अधिकतर अपना समय राजनीतिक आकांक्षों के में व्यतीत करते हैं और केवल समय व्यतीत करते हैं। उन्हें आम जनमानस की समस्याएँ सरोकार नहीं होती, तभी तो सरकारों द्वारा किया और दावे हकीकत में नहीं बदल पाते जिसका मतदाता भूताने को मजबूर होता है। ऐसे अफरियत जवाबदेही निश्चित नहीं होती जबकि उन्हें पूरी तरह भर्ते विधिवत रूप से मिलते रहते हैं।

Digitized by srujanika@gmail.com

१०५

जिस तरह देश का विविध अनुसूचित भाषाओं के लाग यह सोचते हैं कि हिंदी की वजह से उनकी भाषा का प्रभाव कम हो रहा है, उसी तरह हिंदी सेवियों की एक बड़ी तादाद ऐसा मानती है कि अंग्रेजी के कारण हिंदी का प्रसार बाधित हो रहा है। लेकिन खुद अंग्रेजी का क्या हाल है ? जब हम एक पूर्ण और सशक्त भाषा की बात सोचते हैं, तो हमारे जेहन में उसके कुछ निश्चित प्रतिमान उभरते हैं। जैसे, उसकी एक विकसित लिपि होगी, ध्वनि संसार होगा, शब्दों का विशाल भंडार होगा। शब्दों की वर्तनी, उनका उच्चारण और अर्थ सुनिश्चित होगा। व्याकरण होगा। उसका अपना साहित्य होगा, जिसे पढ़ने वाले लोग होंगे। और उसे सत्ता (आर्थिक-राजनीतिक) का समर्थन प्राप्त होगा। क्या इन पारंपरिक मानकों पर आज की कोई भी भाषा दावे से खरी उतरती है ? अंग्रेजी का प्रयोग करने वाली नई पीढ़ी बहुत तेजी से इमोजी की तरफ बढ़ रही है। कोई बात अच्छी लगे तो एक पूरा बाक्य लिखने की जरूरत नहीं है। किसी बात की आलोचना करनी हो और इस तरह से करनी हो कि दूसरा पक्ष आहत न हो, तो उसके लिए कोई अच्छा शब्द ढूँढ़ने की जरूरत नहीं है। यहां तक कि इमोजी से पैरों प्रेम पत्र लिखे जा सकते हैं। हम भाषा के संदर्भ में आर्थिक प्रभुत्व की चर्चा करते हैं। अब बहुराष्ट्रीय कंपनियों के कारोबारों और उत्पादों के साथ भी इमोजी इस्तेमाल होने लगे हैं। ऐप्ल, गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, सैमसंग, टिवटर, फेसबुक, एलजी, एचटीसी, बार्मिंगम और पेप्सीकों जैसी तमाम कंपनियां इमोजी इस्तेमाल कर रही हैं, और उनके साथ उनके ग्राहक भी। उनके बीच एक नई भाषा विकसित हो रही है। यानी रोमान लिपि और शब्दों की सही वर्तनी का महत्व खत्म ! जब भी कोई नई भाषा विकसित होती है, वह पारंपरिक भाषाओं का दायरा संकुचित करती है। समाज में ऐसे कई तरह के छोटे-मोटे संकेत विकसित होते हैं जो समय के साथ प्रचलन से बाहर हो जाते हैं। यह सोच कर हम इमोजी की भाषा को नजरअंदाज नहीं कर सकते। यह लोगों के

बीच का भाषिक संवाद बदलने का एक नमूना है। इसके और भी पक्षहैं। जब हम ऑक्सफोर्ड और वेब्स्टर के शब्दकोशों में सही वर्तनी और हिज्जे ढूँढ़ रहे होते हैं, तब इंटरनेट पर भेजे जा रहे संदेशों में उन शब्दों के संक्षिप्त रूपों का धड़ल्ले से इस्तेमाल हो रहा होता है। वहां सिफ़ 'आय लव यू' के लिए इलू (आयएलयू) और 'फियर ऑफ मिसिंग यू के लिए एफ़मू' (एफ़ओएमयू) ही नहीं बन रहा है, एक पूरी शब्दावली विकसित हो रही है, जिसमें बीटुबी (बिजेस टु बिजेस), केपीआई (की-परफॉर्मेंस इंडीकेटर), सीपीएम (कॉस्ट पर थार्डजैड) और यूजीसी (यूजर जेनरेटेड कॉन्टेन्ट) जैसे प्रयोग भी शामिल हैं। ये नए संक्षिप्त शब्द पहले के अनेक शब्दों से बने परे फ्रेज को विस्थापित कर देते हैं। आज सिफ़ दोस्तों की अनौपचारिक मंडली में ही नहीं, कॉर्पोरेट की औपचारिक चिट्ठियों, व्यापारिक पत्राचार और तकनीक की दुनिया में भी इस भाषा में लिखित संवाद हो रहे हैं। इंटरनेट की दुनिया में इन संक्षिप्त रूपों को मान्यता प्राप्त है। इनमें से यदि कोई नवनिर्मित शब्द समझ में न आए तो उसे गूगल कर आसानी से देखा जा सकता है। आज से चार-पांच दशक बाद वाली पीढ़ी के लिए शायद यह जान पाना भी मुश्किल हो कि फोमू, किन-किन शब्दों के संक्षेपिकरण से बना है। उसके लिए फोमू ही वह शब्द होगा, जिसके माध्यम से वह अपनी बात कहेगी। फेसबुक पर हर मिनट 50 लाख से ज्यादा लोग अपनी टिप्पणियां पोस्ट करते हैं और 30 लाख से ज्यादा लोग अपना स्टेटस अपडेट करते हैं। इंस्टाग्राम पर प्रति मिनट करोड़ों की तादाद में पोस्ट किए जाते हैं और मोबाइल से

